सूरजमुखी के तेल में 20 प्रतिशत प्रोटीन मिलता

सूरजमुखी की खेती कर किसान कम समय में कमाए अधिक लाभ

सूरजमुखी में विटामिन बी1,बी, बी6, मैग्नीशियम, फास्फोरस, जैसे पोषक तत्व हैं

डीटीएनएन

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ.बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज निदेशक बीज एवं प्रक्षेत्र डॉ महक सिंह ने किसानों के लिए सूरजमुखी की खेती हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सूरजमुखी महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है।इसके बीजों में 45 से 50त्न तक तेल की प्राप्ति होती है।तथा इसमें प्रोटीन 20त्न तक पाई जाती है। उन्होंने बताया कि सूरजमुखी के बीजों में विटामिन बी1,बी3,बी6, मैग्नीशियम, फास्फोरस,प्रोटीन जैसे बहुत सारे पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसलिए सूरजमुखी का प्रयोग आयुर्वेद में कई तरह की दवाइयों के लिए किया जाता है। सूरजमुखी की बुवाई का उत्तम समय फरवरी का दूसरा पखवारा उचित रहता है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि सूरजमुखी की संकुल प्रजातियां जैसे--मॉडर्न, सूर्या, पीबी एनएसब-40 तथा संकर प्रजातियां एसएच- 3322, केवीएसएच-1, एमएसएफएच-17, वीएसएफ-1 प्रमुख है। उन्होंने बताया कि बुवाई कतारों में हल के पीछे चार से पांच सेंटीमीटर गहराई पर करनी चाहिए। लाइन से लाइन की दूरी 45 सेंटीमीटर होनी चाहिए। डॉ सिंह ने कहा कि 1 हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए संकुल प्रजाति का बीज 12 से 15 किलोग्राम तथा संकर प्रजाति का बीज 5 से 6 किलोग्राम की आवश्यकता होती है। उन्होंने सलाह दी है कि बीज बुवाई के पूर्व 12 घंटे पानी में भिगोकर साए में 3 से 4 घंटे सुखाकर 2 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित कर बुवाई करे। उन्होंने कहा कि 100 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर उर्वरक की आवश्यकता होती है। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने किसानों को सलाह दी है कि सूरजमुखी की खेती में 2 कुंतल जिप्सम प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें। जिससे मृदा स्वास्थ्य सुधार के साथ सूरजमुखी के बीज भी स्वस्थ रहते हैं जिससे तेल की मात्रा बढ़ती है।यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से खेती करते हैं तो 28 से 30 कुंतल प्रति हेक्टेयर सूरजमुखी का उत्पादन प्राप्त कर लाभ ले सकते हैं।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष: 14 अंक : 215 कानपुर, सोमवार 06 फरवरी 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य: 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

aswaroop.in

एशिया कप की मेजबानी पर फैसला मार्च में 10

सूरजमुखी की खेती कर, कम समय में कमाए अधिक लाभ : डॉ महक सिंह

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉ.बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज निदेशक बीज एवं प्रक्षेत्र डॉ महक सिंह ने किसानों के लिए सूरजमुखी की खेती हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सूरजमुखी महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है।इसके बीजों में 45 से 50त्न तक तेल की प्राप्ति होती है।तथा इसमें प्रोटीन 20त्न तक पाई जाती है। उन्होंने बताया कि सूरजमुखी के बीजों में विटामिन बी1,बी3,बी6, मैग्नीशियम, फास्फोरस,प्रोटीन जैसे बहुत सारे पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसलिए सूरजमुखी का प्रयोग आयुर्वेद में कई तरह की दवाइयों के लिए किया जाता है। सूरजमुखी की बुवाई का उत्तम समय फरवरी का दूसरा पखवारा उचित रहता है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि सूरजमुखी की संकुल प्रजातियां जैसे- मॉडर्न, सूर्या, पीबी एनएसब-40 तथा संकर प्रजातियां एसएच- 3322, केवीएसएच-1, एमएसएफएच-17, वीएसएफ-1 प्रमुख है। उन्होंने बताया कि बुवाई कतारों में हल के पीछे चार से पांच सेंटीमीटर गहराई पर

करनी चाहिए। लाइन से लाइन की दूरी 45 सेंटीमीटर होनी चाहिए। डॉ सिंह ने कहा कि 1 हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए संकुल प्रजाति का बीज 12 से 15 किलोग्राम तथा संकर प्रजाति का बीज 5 से 6 किलोग्राम की आवश्यकता होती है। उन्होंने सलाह दी है कि बीज बुवाई के पूर्व 12 घंटे पानी में भिगोकर साए में 3 से 4 घंटे सुखाकर 2 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित कर बुवाई करे।

उन्होंने कहा कि 100 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर उर्वरक की आवश्यकता होती है। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने किसानों को सलाह दी है कि सूरजमुखी की खेती में 2 कुंतल जिप्सम प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें। जिससे मृदा स्वास्थ्य सुधार के साथ सूरजमुखी के बीज भी स्वस्थ रहते हैं जिससे तेल की मात्रा बढ़ती है।यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से खेती करते हैं तो 28 से 30 कुंतल प्रति हेक्टेयर सूरजमुखी का उत्पादन प्राप्त कर लाभ ले सकते हैं।

सूरजमुखी की खेती कर, कम समय में कमाए अधिक लाभ : डॉ महक सिंह

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉ.बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज निदेशक बीज एवं प्रक्षेत्र डॉ महक सिंह ने किसानों के लिए सूरजमुखी की खेती हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सूरजमुखी महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है ।इसके बीजों में 45 से 50% तक तेल की प्राप्ति होती है ।तथा इसमें प्रोटीन 20% तक पाई जाती है। उन्होंने बताया कि सूरजमुखी के बीजों में विटामिन बी1,बी3,बी6, मैग्नीशियम, फास्फोरस,प्रोटीन जैसे बहुत सारे पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसलिए सूरजमुखी का प्रयोग आयुर्वेद में कई तरह की दवाइयों के लिए किया जाता है। सूरजमुखी की बुवाई का उत्तम समय फरवरी का दूसरा पखवारा उचित रहता है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि सूरजमुखी की संकुल प्रजातियां जैसेः-मॉडर्न, सूर्या, पीबी एनएसब-40 तथा संकर प्रजातियां एसएच- 3322, केवीएसएच-1, एमएसएफएच-17, वीएसएफ-1 प्रमुख है। उन्होंने बताया कि बुवाई कतारों में हल के पीछे चार से पांच सेंटीमीटर गहराई पर करनी चाहिए। लाइन से लाइन की दूरी 45 सेंटीमीटर होनी चाहिए। डॉ सिंह ने कहा कि 1 हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए संकुल प्रजाति का बीज 12 से 15 किलोग्राम तथा संकर प्रजाति का बीज 5 से 6 किलोग्राम की आवश्यकता होती है। उन्होंने सलाह दी है कि बीज बुवाई के पूर्व 12 घंटे पानी में भिगोकर साए में 3 से 4 घंटे सुखाकर 2 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित कर बुवाई करे। उन्होंने कहा कि 100 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर उर्वरक की आवश्यकता होती है।

सूरजमुखी की खेती कर, कम समय में कमाए अधिक लाभ-डॉ महक सिंह

यूपी मैसेंजर संवाददाता

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉ.बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज निदेशक बीज एवं प्रक्षेत्र डॉ महक सिंह ने किसानों के लिए सूरजमुखी की खेती हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सूरजमुखी महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है इसके बीजों में 45 से 50 फीसदी तक तेल की प्राप्ति होती है तथा इसमें प्रोटीन 20फीसदी तक पाई जाती है। उन्होंने बताया कि सूरजमुखी के बीजों में विटामिन बी1,बी3,बी6, मैग्नीशियम, फास्फोरस,प्रोटीन जैसे बहुत सारे पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसलिए सूरजमुखी का प्रयोग आयुर्वेद में कई तरह की दवाइयों के लिए किया जाता है। सूरजमुखी की बुवाई का उत्तम समय फरवरी का दूसरा पखवारा उचित रहता है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि सूरजमुखी की संकुल प्रजातियां जैसे–मॉडर्न, सूर्या, पीबी एनएसब–40 तथा संकर प्रजातियां एसएच–3322, केवीएसएच–1, एमएसएफएच–17, वीएसएफ–1 प्रमुख है। उन्होंने बताया कि बुवाई कतारों में हल के पीछे चार से पांच सेंटीमीटर गहराई पर करनी चाहिए। लाइन से लाइन की दूरी 45 सेंटीमीटर होनी चाहिए। डॉ सिंह ने कहा कि 1 हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए संकुल प्रजाति का बीज 12 से 15 किलोग्राम तथा संकर प्रजाति का बीज 5 से 6 किलोग्राम की आवश्यकता होती है। उन्होंने सलाह दी है कि बीज बुवाई के पूर्व 12 घंटे पानी में भिगोकर साए में 3 से 4 घंटे सुखाकर 2 ग्राम कार्बेडाजिम से शोधित कर बुवाई करे। उन्होंने कहा कि 100 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर उर्वरक की आवश्यकता होती है। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने किसानों को सलाह दी है कि सूरजमुखी की खेती में 2 कुंतल जिप्सम प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें। जिससे मृदा स्वास्थ्य सुधार के साथ सूरजमुखी के बीज भी स्वस्थ रहते हैं जिससे तेल की मात्रा बढ़ती है।यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से खेती करते हैं तो 28 से 30 कुंतल प्रति हेक्टेयर सूरजमुखी का उत्पादन प्राप्त कर लाभ ले सकते हैं।

वर्ष 17 अंक 36 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, सोमवार 06 फरवरी 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक नगर छाया

आप की आवाज़.....

www.nagarchhaya.com

2 पहले टेस्ट बाहर हुए जोश हेजलवुड

सूरजमुखी की खेती कर, कम समय में कमाएं अधिक लाभः डॉ. महक सिंह

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ.बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज निदेशक बीज एवं प्रक्षेत्र डॉ महक सिंह ने किसानों के लिए सूरजमुखी की खेती हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सूरजमुखी महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है।इसके बीजों में 45 से 50त्न तक तेल की प्राप्ति होती है।तथा इसमें प्रोटीन 20त्न तक पाई जाती है। उन्होंने बताया कि सूरजमुखी के बीजों में विटामिन बी1,बी3,बी6, मैग्नीशियम, फास्फोरस,प्रोटीन जैसे बहुत सारे पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसलिए सूरजमुखी का प्रयोग आयुर्वेद में कई तरह की दवाइयों के लिए किया जाता है। सूरजमुखी की बुवाई का उत्तम समय फरवरी का दूसरा पखवारा उचित रहता है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि सूरजमुखी की संकुल प्रजातियां जैसे-मॉडर्न, सूर्या, पीबी एनएसब-40 तथा संकर प्रजातियां एसएच- 3322, केवीएसएच-1, एमएसएफएच-17, वीएसएफ-1 प्रमुख है। उन्होंने बताया कि बुवाई कतारों में हल के पीछे चार से पांच सेंटीमीटर गहराई पर करनी चाहिए। लाइन से लाइन की दूरी 45 सेंटीमीटर होनी चाहिए। डॉ सिंह ने कहा कि 1 हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए संकुल प्रजाति का बीज 12 से 15 किलोग्राम तथा संकर प्रजाति का बीज 5 से 6 किलोग्राम की आवश्यकता होती है। उन्होंने सलाह दी है कि बीज बुवाई के पूर्व 12 घंटे पानी में भिगोकर साए में 3 से 4 घंटे सुखाकर 2 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित कर बुवाई करे। उन्होंने कहा कि 100 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर उर्वरक की आवश्यकता होती है। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने किसानों को सलाह दी है कि सूरजमुखी की खेती में 2 कुंतल जिप्सम प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें। जिससे मृदा स्वास्थ्य सुधार के साथ सूरजमुखी के बीज भी स्वस्थ रहते हैं जिससे तेल की मात्रा बढ़ती है।यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से खेती करते हैं तो 28 से 30 कुंतल प्रति हेक्टेयर सूरजमुखी का उत्पादन प्राप्त कर लाभ ले सकते हैं।